

समाज कार्य व्यवहार में मनोविज्ञान की प्रासंगिकता

* ऋचा चौधरी

प्रस्तावना

मनोविज्ञान एवं समाज कार्य दोनों अलग-अलग विषय हैं। जहाँ मनोविज्ञान अपने दृष्टिकोण में प्रबलता से अकादमी है वहीं समाज कार्य प्रबलता से प्रयुक्तोन्मुखी है। यद्यपि दोनों में ऐसी विभिन्नता मौजूद है परन्तु वे एक दूसरे से इतने घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित हैं कि प्रायः उनके भिन्न अस्तित्व एवं व्यवहार के विषय में विचार करना असंभव प्रतीत होता है। मनोविज्ञान की उत्पत्ति समाज कार्य के काफी समय पूर्व ही हो चुकी थी और इसने समाज कार्य के उपकरणों एवं तकनीकों के विकास हेतु कई मौलिक सिद्धान्तों एवं आवधारणाओं को प्रदान किया। ये दोनों विषय मानव व्यवहार के तत्त्वों, मानव स्वभाव और आवश्यकताओं, मानव योग्यताओं, व्यवहारों तथा संरचनाओं पर कार्य करते हैं। दोनों ही मानव समस्याएँ हैं, चाहे वे शारीरिक या मानसिक हो, को अपने तरीके से समाधान करने का प्रयास करते हैं। परन्तु कई स्वरूपों में कर्मावेश वे एक से हैं। दोनों विषयों में व्यक्तियों को सहायता करने की विधियों में एक सीमा तक समान उपकरण एवं तकनीकों का प्रयोग किया जाता है। फिर भी न दोनों व्यवसायोन्मुखी विषयों के अन्तर्वैषियक संबंधों के विषय में जानना आवश्यक है।

मनोविज्ञान का परिचय

समाज कार्य की कई धारणाएँ, नियम, सिद्धान्त, विधियाँ, तकनीक एवं उपकरण मनोविज्ञान पर आधारित एवं उससे ली गयी हैं क्योंकि मानव कल्याण एवं विकास समाज कार्य का अंतिम लक्ष्य है। मनोविज्ञान वह विज्ञान है जो मानव व्यवहारों का अध्ययन करता है और मानव व्यक्तित्व तथा व्यवहार के तरीकों पर प्रभाव डालने वाले विभिन्न तत्त्वों और कारकों के व्यावहारिक प्रयोगों एवं सिद्धान्तों का नतीजा है।

मौलिक सिद्धान्तों एवं आवधारणाओं को प्रदान किया। ये दोनों विषय मानव व्यवहार के तत्त्वों, मानव स्वभाव और आवश्यकताओं, मानव योग्यताओं, व्यवहारों तथा संरचनाओं पर कार्य करते हैं। दोनों ही मानव समस्याएँ हैं, चाहे वे शारीरिक या मानसिक हो, को अपने तरीके से समाधान करने का प्रयास करते हैं। परन्तु कई स्वरूपों में कमोवेश वे एक से हैं। दोनों विषयों में व्यक्तियों को सहायता करने की विधियों में एक सीमा तक समान उपकरण एवं तकनीकों का प्रयोग किया जाता है। फिर भी न दोनों व्यवसायोंन्मुखी विषयों के अन्तर्वैषियक संबंधों के विषय में जानना आवश्यक है।

मनोविज्ञान का परिचय

समाज कार्य की कई धारणाएँ, नियम, सिद्धान्त, विधियाँ, तकनीक एवं उपकरण मनोविज्ञान पर आधारित एवं उससे ली गयी हैं क्योंकि मानव कल्याण एवं विकास समाज कार्य का अंतिम लक्ष्य है। मनोविज्ञान वह विज्ञान है जो मानव व्यवहारों का अध्ययन करता है और मानव व्यक्तित्व तथा व्यवहार के तरीकों पर प्रभाव डालने वाले विभिन्न तत्त्वों और कारकों के व्यावहारिक प्रयोगों एवं सिद्धान्तों का नतीजा है। मनोविज्ञान में प्रयोग किए जाने वाले सामान्य अवधारणाओं, उपकरणों एवं तकनीकों, जोकि समाज कार्य व्यवहार, समाज कार्य एवं मानव व्यवहार के लिए उपयोगी हैं पर चर्चा करेंगे।

मनोविज्ञान (साइकोलॉजी) शब्द ग्रीक साहित्य से लिया गया है जो कि दो शब्दों अर्थात् "साइके" एवं "लोगस" का युग्म है जिसका अर्थ है 'आत्मा' एवं "इसका अध्ययन"। इससे यह प्रदर्शित होता है कि प्रारम्भ में मनोविज्ञान को एक ऐसे विषय के रूप में देखा गया जो कि आत्मा का अध्ययन करता है। आत्मा शब्द को अस्पष्ट रूप से प्रयोग किया गया। इसके पश्चात् आत्मा शब्द की जगह मन शब्द का प्रयोग किया गया। समय बीतने के साथ मनोविज्ञान की प्रकृति में काफी परिवर्तन आया, कोरी कल्पना से वैज्ञानिक प्रक्रिया तक एवं आज यह मन, चेतन एवं मानव व्यवहारों के अध्ययन का विज्ञान के रूप में जाना जाता है। व्यवहार का व्यापक अर्थ है, जिसमें सभी जीवित प्राणियों के सभी प्रकार के व्यवहारों को सम्मिलित किया जाता है। इस प्रकार मनोविज्ञान प्रारम्भिक दौर में शुद्ध कल्पना से वैज्ञानिक श्रम एवं विशिष्ट शोध प्रविधियों तक के विषय के रूप में स्थापित होने के विभिन्न अवस्थाओं से गुजरा है। मनोविज्ञान अब व्यवहार के विज्ञान के रूप में समझा जाता है।

मनोविज्ञान के स्कूल

स्कूल	योगदान देने वाले	विषय वस्तु	मौलिक क्षेत्र
1. व्यवहार (1913-वर्तमान)	जाहन बी.वाटसन इवान पावलोव बी.एफ.स्निकर	केवल पर्यवेक्षणीय घटनाएँ बाह्य व्यवहार मानव एवं पशु	पर्यावरण का प्रभाव उद्दीपन-अनुक्रिया संबंध वैज्ञानिक रूप से अध्ययन किए जा सकते हैं।
2. मनोविश्लेषणात्मक (1900-वर्तमान)	सिगमण्ड फ्रायड कार्ल युंग अल्फ्रेड एडलर	व्यवहार का अचेतन निर्धारण	प्रारम्भिक अवस्था के अचेतन प्रेरक और अनुभव जो व्यक्तित्व और मानसिक समस्याओं को प्रभावित करते हैं।
3. मानवतावादी (1950-वर्तमान)	कार्ल रोजर्स अब्राहम मैस्लो	मानव अनुभवों के के अद्वितीय पहलू	मानव मुक्त और विवेकशील प्राणी होता है जो व्यक्तिगत विकास में समर्थ होता है और वे पशुओं से भिन्न होते हैं।
4. संज्ञानात्मक (1950-वर्तमान)	ज्यॉ प्याजे नार्म चोमस्की हाबर्ट साईमन	विचार, मानसिक प्रक्रियाएँ	मानव व्यवहारों को तभी पूर्ण रूप से जब कि उनके सूचना ग्रहण करने, भंडार करने और उसे कार्य करने और उस पर कार्य करने का परीक्षण किया जाए।
5. जीवशास्त्री (1950-वर्तमान)	जेम्स ओल्ड्स रोजर स्पेरी	मानव एवं पशुओं के शरीर पर आधारित	एक प्राणी के प्रकार्यों को शरीर संरचनाओं एवं जैव रासायनिक प्रक्रियाओं को व्यवहार के कारक के रूप में विश्लेषण।

मनोविज्ञान की परिभाषा

मनोविज्ञान की परिभाषाएँ उद्विकास एवं विकास के साथ परिवर्तित होती रही हैं। मनोविज्ञान का केन्द्र बिन्दु बदलता रहा है और उसके साथ परिभाषाओं में भी परिवर्तन आते रहे हैं। कुछ प्रसिद्ध परिभाषाएँ नीचे दी जा रही हैं:

- 1) मनोविज्ञान व्यक्तियों का उनके पर्यावरण के संदर्भ में की गई गतिविधियों का विज्ञान है।
- 2) मनोविज्ञान को एक विज्ञान के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो मानव एवं अन्य पशुओं के व्यवहारों का अध्ययन करता है।
- 3) जे.बी. वाटसन ने मनोविज्ञान को व्यवहार का निश्चयात्मक विज्ञान के रूप में परिभाषित किया है।
- 4) मनोविज्ञान मानव प्रकृति का अध्ययन है।
- 5) मनोविज्ञान जीवन में प्रस्तुत होने वाले कोई भी किसी भी प्रकार की दशाओं के प्रति अनुक्रियाओं पर कार्य करता है। यहाँ अनुक्रिया व्यवहार से तात्पर्य प्राणी द्वारा की गयी प्रक्रियाओं, सामंजस्य, गतिविधियों एवं अभिव्यक्तियों से है।
- 6) जेम्स ड्रेवर ने मनोविज्ञान को निश्चयात्मक विज्ञान के रूप में परिभाषित किया है जो मानव और पशु के व्यवहार का अध्ययन करता है।

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि मनोविज्ञान एक विज्ञान है, यह मानव एवं अन्य पशुओं की गतिविधियों का एक निश्चयात्मक विज्ञान है। यह वातावरण के संबंध में व्यवहार का विज्ञान है। यह मानव प्रकृति का विज्ञान है, यह जीवन में प्रस्तुत होने वाले किसी भी प्रकार की दशाओं के प्रति अनुक्रियाओं एवं प्राणी की अभिव्यक्ति पर कार्य करता है। मनोविज्ञान चेतन, अवचेतन एवं अचेतन अनुक्रियाओं का अध्ययन एवं व्याख्या करता है।

समाज कार्य व्यवहार में मनोविज्ञान की उपयोगिता

मनोविज्ञान मानव व्यवहार, संवेगों और प्रक्षेपणों का अध्ययन करता है। यह व्यवहार प्रतिमानों के बनने के स्वाभाविक कारकों का भी अध्ययन करता है। हम किसी के

विकास के विषय में मनोविज्ञान द्वारा ज्ञान प्राप्त करते हैं। संज्ञान; अधिगम धारण एवं विस्मरण मनोविज्ञान की प्रमुख विषय वस्तुएँ हैं। समाजीकरण की प्रक्रिया का ज्ञान मनोविज्ञान पर निर्भर है। व्यक्ति की प्रतिक्रिया एवं व्यवहार बहुत सीमा तक प्रक्षेपण पर निर्भर होता है जो कि एक मनोविज्ञानिक घटना है। मनोविज्ञान वंशानुक्रम एवं वातावरण की अन्तःक्रियाओं का अध्ययन कर हमें शारीरिक एवं मानसिक गुणों एवं योग्यताओं में व्यक्तिगत भिन्नताओं के प्रति जागरूक करता है।

समाज कार्य व्यवहार के दौरान हम मानव व्यवहार के अध्ययन एवं विश्लेषण के लिए मनोविज्ञान की सहायता लेते हैं। जब तक सामाजिक कार्यकर्ता प्रकार्य द्वारा अथवा व्यवहार परिमार्जन द्वारा व्यक्तित्व में परिवर्तन लाने का प्रयास करता है तो उसे मनोविज्ञान की सहायता लेनी पड़ती है। सामंजस्य से संबंधित समस्याओं के समाधान में मनोविज्ञान सामाजिक कार्यकर्ता की सहायता करता है। समाज कार्य व्यवसाय की वैयक्तिक सेवाकार्य पद्धति बहुत कुछ मनोविज्ञान की विषय वस्तुओं पर निर्भर है। समाज कार्य व्यवसाय की सामूहिक सेवा कार्य विधि समूह को मजबूती प्रदान करने के लिए और उसको और अच्छा बनाने के लिए बहुत से समाज मनोविज्ञान तत्वों को लेता है। समाज मनोविज्ञान समूह नैतिकता, नेतृत्व गुणों एवं लक्षणों, भीड़ एवं स्रोत समूहों के व्यवहार का अध्ययन करता है जो सामाजिक सामूहिक तथा कुछ सीमा तक सामुदायिक संगठन में उपयोगी होता है।

मनोविज्ञान समाज कार्य व्यवहार के क्षेत्र में काफी सहायता प्रदान करता है जैसे वैयक्तिक और परिवार वैयक्तिक सेवा कार्य (उदाहरण के लिए व्यक्तित्व में परिमार्जन), बच्चों के स्कूल से संबंधित समस्याओं के लिए निदान और उपचार योजना; व्यक्ति का प्राथमिक और द्वितीयक समूहों के साथ सामंजस्य में; शारीरिक और मानसिक रोगियों का चिकित्सकीय आवश्यकताओं के अनुसार व्यवस्थापन और अन्य के साथ सामंजस्य में, निदान एवं सामूहिक व्यवहारों के परिमार्जन और नेतृत्व गुणों के विकास के ज्ञान के लिए, व्यक्ति के अहम के विश्लेषण और सुरक्षात्मक प्रतिक्रियाओं को समझने में, और व्यक्तियों और समाज के सकारात्मक सामंजस्य को बढ़ाने और आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए परामर्श और निर्देश प्रदान करने में सहायता करता है।

समाज कार्य और मानव व्यवहार

समाज कार्य व्यवहार में लोगों की मनोदैहिक अथवा सामाजिक आर्थिक समस्याओं पर कार्य करने के लिए मानव व्यवहार का ज्ञान आवश्यक है। व्यक्तिगत, समूह अथवा

सामुदायिक स्तर पर सेवार्थी की सहायता के लिए सामाजिक कार्यकर्ता के लिए आवश्यक है कि वह व्यवहार प्रतिमानों को जानें। सेवार्थी के सकारात्मक व्यवहार जैसे सहयोग, पहल, मुक्तवार्ता, इच्छा समाजिक कार्यकर्ता को निदान और उपचार योजना बनाने में सहायता करते हैं। नकारात्मक व्यवहार जैसे अनिच्छा, असहयोग, बचाव, अलगाव, तथ्य को छिपाना एवं पक्षपात इत्यादि कठिनाइयाँ उत्पन्न करते हैं तथा समाज कार्य व्यवसाय के उचित व्यवहार में अवरोध पैदा करते हैं। वैयक्तिक सेवा कार्य व्यवहार में सामाजिक कार्यकर्ता को अपने सेवार्थी के साथ-साथ उसके माता-पिता भाई-बहन, अन्य पारिवारिक सदस्यों, पड़ोसियों, मित्रों, सहपाठियों, सहकर्मियों एवं अन्य जो लोग भी सेवार्थी पर प्रभाव डालते हैं कि साथ कार्य करना पड़ता है। इन सभी के व्यवहार की अन्तःक्रिया के प्रतिमानों को ध्यान में रखने की आवश्यकता है। यद्यपि वैयक्तिक सेवाकार्य में केन्द्र में व्यक्ति होता है परन्तु अन्यो की क्रियाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। सेवार्थी को प्यार और स्नेह की आवश्यकताएँ केवल तभी पूरी हो सकती हैं जब उसके माता-पिता उसके प्रति स्नेही हों। एक अध्यापक कक्षा में तभी अच्छे तरीके से पढ़ा सकता है जब विद्यार्थी सीखने के लिए इच्छुक हों और उनमें धैर्य हो। एक समूह कार्यकर्ता एक समूह के निर्माण और सुगम संचालन के लिए तभी सहायता प्रदान कर सकता है जब इसके सदस्य सहयोगिता, समन्वय और प्रजातांत्रिक ढंग से व्यवहार करें। सामुदायिक संगठन में समुदाय के लोग, समुदाय के नेता, वहाँ के संगठनों के लोग और अन्य लोग जो कि किसी न किसी रूप में समुदाय में निर्देशित दिशा में संगठनात्मक कार्यों को सहायता देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं उन लोगों का व्यवहार, उनके व्यवहार की प्रकृति सामुदायिक कार्यकर्ता के क्रियाओं की गुणवत्ता और मात्रा को निर्धारित करती है। ऐसे व्यवहार जो कि सांस्कृतिक, सामाजिक, पक्षपात अथवा धार्मिक भिन्नता को प्रदर्शित करते हैं, व्यावसायिक या आर्थिक पक्षपात, राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता एवं संसाधन वितरण की कमियाँ सामुदायिक कार्य में अवरोध उत्पन्न कर सकती हैं।

यद्यपि लोगों के व्यवहार का गहराई से ज्ञान प्राप्त करना कठिन है फिर भी सेवार्थी से संबंधित लक्ष्यों एवं उद्देश्यों को अधिक से अधिक सफलतापूर्वक प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि सामाजिक कार्यकर्ता इसको जानने का प्रयास करें।

सामान्य मनोविज्ञान

मनोविज्ञान की वह शाखा जो सामान्य मानव के मनोवैज्ञानिक पहलुओं का अध्ययन करती है। उसे सामान्य मनोविज्ञान कहा जाता है। सामान्य मनोविज्ञान में सामान्यतया वंशानुक्रम

और वातावरण, अभिवृद्धि एवं परिपक्वता, व्यवहार के शारीरिक आधार, संवेदन बोध, और ध्यान, अनुभव एवं संवेग धारण और विस्मरण, अधिगम, विचार करना एवं तर्क करना, बुद्धि, मनोवैज्ञानिक एवं व्यक्तित्व, व्यक्तिगत भिन्नता, बौद्धिक शक्ति एवं प्रतिक्रिया समय से संबंधित अवधारणाओं, सिद्धांतों एवं विधियों पर कार्य किया जाता है।

उपर्युक्त अवधारणाओं में से कुछ की व्याख्या नीचे दी गयी है:

जैविक उत्तराधिकार क्रोमोसाम (गुणसूत्र) में अवस्थित जीन से प्राप्त होता है। कुल 46 गुणसूत्र होते हैं। एक बच्चा अपने माता-पिता प्रत्येक से 23-23 जीन्स प्राप्त करता है लेकिन जीन की व्यवस्था एवं योगों की लम्बी शृंखला होने के कारण एक ही परिवार के सदस्यों के वंशानुक्रम संरचना में अंतर का कारण वंशानुक्रम होता है। शरीर गठन, बुद्धि एवं योग्यता सामाजिक व्यवहार और व्यक्तित्व के गुणों की अपेक्षा उत्तराधिकार से ज्यादा प्रभावित होती है। यद्यपि उपर्युक्त लक्षणों पर वंशानुक्रम और वातावरण की सापेक्षिक भूमिकाओं पर मनोवैज्ञानिकों में अभी भी बहस चल रही है।

परिपक्वता शब्द विकास की दशा के साथ प्रक्रिया को भी दर्शाता है। किसी भी व्यक्ति में निश्चित व्यवहार प्रकट होने के पूर्व एक स्तर तक परिपक्वता होना आवश्यक है।

हम ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से अनुष्णों को प्राप्त करते हैं जो कि उद्दीपकों द्वारा प्रभावित होते हैं, जो वातावरण में ऊर्जा परिवर्तन करते हैं। हम उद्दीपकों को ज्ञानेन्द्रियों अथवा ग्राहकों द्वारा प्राप्त करते हैं, जिनका संप्रेषण प्रभावकों (मांसपेशियों एवं ग्रन्थियों) से तंत्रिका तंत्र द्वारा भेजे जाते हैं। केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र का एक महत्वपूर्ण भाग दिमाग है। गति, वाकशक्ति, दृष्टि, स्वाद, गंध एवं शिक्षण जैसे प्रकार्य दिमाग के विशेष हिस्सों में अवस्थित होते हैं। अवगम, धारणा एवं शिक्षण जैसे जटिल प्रकार्य किसी हिस्सा विशेष के द्वारा नहीं बल्कि सम्पूर्ण दिमाग द्वारा किए जाते हैं।

अनुभव संवेदना की जटिलताएँ हैं। अनुभव, उम्र, लिंग एवं प्रशिक्षण जैसे कारकों के अनुसार भिन्न व्यक्तियों में भिन्न होते हैं। संवेग वे अनुभव है जिसमें शक्ति एवं तनाव सम्मिलित होते हैं। संवेग में आपात मूल्य होते हैं जो शरीर को क्रिया के लिए तैयार करते हैं। संवेग को नियंत्रित करने की योग्यता आवश्यक है। संवेग को उद्दीपक को नियंत्रित करके नियंत्रित किया जा सकता है जो उसे प्रारम्भ करते हैं।

अभिप्रेरक अन्तर्नाद होते हैं। प्रेरक जन्मजात शारीरिक तनाव से अर्जित जटिल आवश्यकताओं तक हो सकते हैं। भूख, प्यास, सेक्स, आराम एवं निद्रा महत्वपूर्ण शारीरिक आवश्यकताएँ हैं। प्रेरक द्वन्द्व विकसित करते हैं। यदि किसी में ये द्वन्द्व

ज्यादा मात्रा में और बार-बार होते रहते हैं तो ऐसी समस्याओं को दूर करने हेतु परामर्शक की सहायता लेनी चाहिए।

शिक्षण निर्देशित शारीरिक और मानसिक गतिविधियों का परिणाम होता है जो कि नए और परिवर्तित अनुक्रिया की ओर ले जाता है। यह प्रयास और गलती की अवधियों से गुजरते हुए अन्ततः उपयुक्त अनुक्रिया चयन की ओर ले जाती है। आवश्यकताओं की संतुष्टि अथवा उनमें कटौती प्रभावशाली अनुक्रिया करती है जिसे पुनर्बलन कहते हैं। मानव शिक्षण में लक्ष्य महत्वपूर्ण होते हैं। प्रभावशाली शिक्षण में सतर्क नियोजन, निर्देशन एवं अंतर्दृष्टि विकास द्वारा बढ़ोत्तरी की जा सकती है। आदत व्यवहार की शृंखलाएँ होती हैं जो अपने आप बनती है। बहुत सी आदतें गड़बड़ होती हैं, जिनको बहुत से तकनीकों द्वारा दूर किया जा सकता है। शिक्षण हेतु कुछ अभिप्रेरणायें अथवा अन्तर्नाद आवश्यक हैं। जिज्ञासा एवं रुचि शिक्षण को सुगम बनाती है। इनको व्यक्तिगत जीवन के संदर्भ में मापा जा सकता है और दैनिक जीवन में प्रयुक्त किया जाता है। एक अच्छा विद्यार्थी रूपरेखा, नोट, नियम एवं सारणी इत्यादि बनाता है एवं जब थकान अथवा बोरियत महसूस करता है तो उस समय नहीं पढ़ता।

धारणा एवं विस्मरण पूर्व में सीखी गयी एवं भूत से सम्बन्धित होते हैं। स्मृति के पक्षों को चार वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है: (1) ध्यान या स्व शिक्षण (2) धारणा अथवा अनुष्णों का एकत्रीकरण, (3) पुनःध्यान में लाना, (4) पहचान। स्मृति के सिद्धान्त इन कारकों को विस्मरण हेतु उत्तरदायी कारक मानते हैं: (1) निष्क्रिय हास (2) पुरानी स्मृति में नये का हस्तक्षेप।

चिंतन करना सामान्यतः छिपा हुआ अथवा अन्तर्व्यक्त व्यवहार होता है कि जिसमें अधिकांशतः अनुष्णों, विचारों एवं अवधारणाओं को प्रयोग किया जाता है। चिंतन केवल सिर से ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण शरीर से सम्बन्धित होता है। सोचने और तर्क करने में दिमाग प्राथमिक होता है, लेकिन चिंतन के दौरान की गयी मांसपेशीय गतिविधियाँ यह संकेत करती हैं कि उस दौरान दिमाग के बहुत से हिस्से सक्रिय होते हैं।

परीक्षणात्मक मनोवैज्ञानी व्यवहार के तथ्यों का मापन करते हैं और परिणाम सांख्यिकीय रूप में दर्शाते हैं। ये सांख्यिकीय अंकों के समूहों का निष्कर्ष निकालती है। मानसिक मापन का महत्वपूर्ण पक्ष विभिन्न गुणों के अन्तर्संबन्धों से सम्बन्धित होता है।

बौद्धिक व्यवहार अमूर्त, यांत्रिक अथवा सामाजिक हो सकता है। अमूर्त व्यवहार प्रतीकों के साथ कार्य करने से, यांत्रिक व्यवहार भौतिक, वस्तुओं, तथा मशीनों इत्यादि के साथ कार्य करने से तथा सामाजिक व्यवहार व्यक्तिगत और सामाजिक मामलों में निपुणताओं से सम्बन्धित होते हैं।

व्यक्ति शारीरिक, मानसिक एवं व्यक्तिगत चरित्रों के आधार पर एक दूसरे से भिन्न होते हैं। एक व्यक्ति के गुणों में पर्याप्त भिन्नता होती है। लिंग भिन्नता परिपक्वता की स्थिति में यह दर्शाती है कि पुरुष स्त्रियों की तुलना में मजबूत और भारी होते हैं, लेकिन मानसिक योग्यता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं होता। दोनों लिंगों के बीच बौद्धिक योग्यता की तुलना में संवेगों में ज्यादा अंतर पाया जाता है। बौद्धिक योग्यता परीक्षणों के आधार पर मनोविज्ञानी और सामाजिक कार्यकर्ता अपने सेवार्थी को वैध सूचनाएँ प्रदान करते हैं जिससे वे अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करें।

व्यक्तित्व के अन्तर्गत शरीर, आकार-प्रकार, बुद्धि, तर्कशक्ति और सामाजिक व्यवहार की विशेषताएँ प्रमुख कारक माने जाते हैं। व्यक्तित्व के गुण योग्यताओं के समान नहीं होते। व्यक्तित्व व्यक्ति के उनकी परिस्थिति विशेष के प्रति विशिष्ट प्रतिक्रिया के तरीकों को दर्शाती है। व्यक्ति के गुणों की जब नैतिकता अथवा मूल्यों के आधार पर व्याख्या की जाती है तो वह चरित्र बन जाता है। जन्म से परिपक्वता तक व्यक्तित्व का निर्धारण जैविक कारकों की सीमा के अंदर समाज द्वारा कर दिया जाता है। सामान्यता वह व्यवहार है जो कि समाज द्वारा सहन किया जाता है।

प्रतिक्रिया समय वह समय है जो उद्दीपक के प्राणी के द्वारा अनुक्रिया करते समय लगता है, मनोविज्ञान में प्रतिक्रिया समय के मापन हेतु विशेष उपकरण उपलब्ध हैं। वे व्यक्ति के विशेष पेशे के लिए उच्च सीमा की सतर्कता एवं ध्यान की पहचान हेतु उपयोगी होते हैं।

बाल मनोविज्ञान

बाल मनोविज्ञान मनोविज्ञान की वह शाखा है जो एक मानव की बाल्यावस्था का अध्ययन करती है। मनोवैज्ञानिक 12 वर्ष की उम्र के मानव को बालक मानते हैं और 12 वर्ष से 18 वर्ष की उम्र के मानव को किशोर। गर्भधारण से लेकर 18 वर्ष की उम्र तक का विकास बाल मनोविज्ञान का विषय है। एक व्यक्ति की कुल बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था को पाँच वर्गों में विभाजित किया गया है। जैसे— गर्भपूर्वावस्था, शैशवावस्था, बाल्यावस्था और किशोरावस्था। प्रथम अवस्था निषेचन से जन्म तक। द्वितीय अवस्था जन्म से 15 दिनों तक, तृतीय अवस्था 15 दिनों से 2 वर्ष तक, चतुर्थ अवस्था 2 वर्षों से 11 वर्षों तक एवं पंचम अन्तिम अवस्था 11 वर्षों से 18 वर्षों तक। एक दूसरा वर्गीकरण इस प्रकार है— (1) गर्भपूर्वावस्था (निषेचन से जन्म तक), (2) मौखिक (जन्म से 1 वर्ष), (3) गुदावस्था (1 वर्ष से 3 वर्ष), (4) इडिपस (3 से 6 वर्ष), (5)

कामप्रसुप्तावस्था (6 से 11 वर्ष) (6) किशोरावस्था (11 वर्ष से 18 वर्ष)। बाल मनोविज्ञान के अंतर्गत बालक की अवस्थाओं एवं अभिवृद्धि, विकास एवं परिपक्वता, अभिवृद्धि एवं विकास पर पर्यावरणीय प्रभाव, प्राथमिक, द्वितीयक समूहों एवं समाज के लोगों से मनोसामाजिक अन्तःक्रिया का अध्ययन किया जाता है। एक व्यक्ति निषेचन एवं मृत्यु तक लगातार परिवर्तित होता रहता है। बाल्यावस्था से किशोरावस्था तक बच्चे के शारीरिक एवं मानसिक संरचनाओं में विकास होता रहता है। विकास एक निरंतर प्रक्रिया है एवं होने वाले परिवर्तन उसके द्वारा सदैव जाने नहीं जाते। बाल्यावस्था में विकास की गति तीव्र होती है। सभी विकासात्मक परिवर्तनों की प्रकृति एक जैसी नहीं होती। वे विभिन्न प्रकारों से अभिवृद्धि की प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं। विकास के दौरान परिवर्तनों को चार प्रमुख समूहों में विभाजित किया गया है—

- 1) **आकार में परिवर्तन** — इस प्रकार के परिवर्तन शारीरिक अभिवृद्धि में दिखायी पड़ते हैं लेकिन मानसिक अभिवृद्धि में इनका अवलोकन किया जा सकता है। सामान्य विकास के दौरान—ऊँचाई, वजन एवं बच्चे की परिधि में वृद्धि होती है। शरीर की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु आंतरिक अंगों जैसे हृदय, आँते एवं पेट के आकार में, वृद्धि होती है। बच्चे का शब्द भण्डार, तर्कशक्ति, धारणा, अवगम, एवं सृजनात्मक कल्पना में वृद्धि होती है।
- 2) **अनुपात में परिवर्तन** — बच्चे के शरीर विकास में केवल आकार में परिवर्तन नहीं होता बल्कि सभी अंगों के अनुपात में परिवर्तन होता है। बच्चे के मानसिक अनुपात को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। बच्चे की रुचि अपने आपसे बदलकर अन्य बच्चों में बढ़ती है और किशोरावस्था में विपरीत लिंग की ओर।
- 3) **पुरानी आकृतियों का लोप** — एक व्यक्ति में तीसरा महत्वपूर्ण परिवर्तन है शरीर की कुछ पुरानी आकृतियों का लोप होना। जैसे—जैसे बच्चा बड़ा होता है उसके हृदय के पास अवस्थित थाइमस गिल्टी, दिमाग के पास स्थित पीनयिल ग्रंथी; बाल्यावस्था के बाल एवं दूध के दाँत लोप हो जाते हैं। बहुत से मानसिक लक्षण व जैसे गूँ गूँ करना, कई प्रकार से बोलना, उत्तेजक क्रियाएँ, पेट एवं घुटने के बल रेंगना, सूँघने एवं स्वाद की तेजी इत्यादि का लोप हो जाता है।
- 4) **नयी आकृतियों की प्राप्ति** — बहुत सी नई शारीरिक एवं मानसिक आकृतियाँ शिक्षण के द्वारा प्राप्त की जाती हैं लेकिन उनमें से कुछ परिपक्वता अथवा जन्म के समय पूर्ण रूप से विकसित न हुए स्थानीय लक्षणों के उभरने का परिणाम होता है। शारीरिक आकृतियों में और भी जैसे नये दाँतों का आना, बालों में वृद्धि,

प्रजनन से जुड़े लक्षणों का आना आदि भी सम्मिलित है। मानसिक लक्षणों में काम सम्बन्धी जिज्ञासा, कामेच्छाद्वय नैतिक मानक, धार्मिक विश्वास, भाषा का ज्ञान एवं तंत्रिका प्रवृत्तियाँ सम्मिलित हैं।

विकास समरूप प्रक्रिया नहीं है। गर्भपूर्वावस्था में सर्वाधिक तीव्र होती है। निषेचन से जन्म तक वजन में वृद्धि 11,000,000 बार जबकि जन्म से परिपक्वता तक यह वृद्धि 22 बार होती है। तीन वर्ष से छः वर्ष तक वृद्धि दर तीव्र रहती है, लेकिन इसमें भी पहले तीन वर्षों में अधिक तीव्र रहती है। विकास एक प्रतिमान के अनुसार होता है और एक क्रम में चलता है प्रत्येक अवस्था पिछली अवस्था का परिणाम होता है एवं आने वाली अवस्था के लिए आवश्यक होता है। चार से सोलह हफ्तों में शरीर अपने बारह गति सम्बन्धी मांसपेशियों पर नियंत्रण प्राप्त कर लेता है। सोलह से अठारह सप्ताह में बच्चा अपने सिर को सहारा देने वाली मांसपेशियों पर नियंत्रण प्राप्त कर लेता है एवं अपने हाथों को घुमा लेता है। तब बालक चीजों के पास पहुँचने लगता है। अठारह सप्ताह से चालीस सप्ताह में बच्चा अपने धड़ एवं हाथों पर नियंत्रण प्राप्त कर लेता है। यह उसको बैठने, वस्तुओं को पकड़ने स्थानान्तरण करने एवं इधर-उधर करने में मदद करता है। चालीस से बावन सप्ताह में वह अपने पैरों, चारों उंगलियों एवं अंगूठे पर नियंत्रण करने लगता है। वह सीधे खड़ा हो सकता है एवं अंगूठे पर नियंत्रण करने लगता है। वह सीधे खड़ा हो सकता है एवं प्रहार कर सकता है एवं तोड़ सकता है। दो वर्षों में वह टहल एवं दौड़ सकता है, वह शब्दों एवं वाक्यों को बोलने लगता है, आंतों एवं मुत्राशय को नियंत्रित करने लगता है, और व्यक्तिगत पहचान एवं व्यक्तिगत अधिकार की प्रारम्भिक समझ विकसित कर लेता है। तीसरे वर्ष में वह वाक्यों को बोलने लगता है एवं विचार के उपकरण के रूप में क्रियाओं का प्रयोग करता है। वह अपने वातावरण को समझने के प्रति रुझान को दर्शाता है एवं सांस्कृतिक मांगों को पूरा करता है। चौथे वर्ष में वह बहुत प्रश्नों को पूछता है, समानता को समझता है एवं सामान्यीकरण तथा सिद्धान्तीकरण की प्रवृत्ति को दर्शाता है। वह अपने धर के दैनन्दिन कार्यों में लगभग आत्मनिर्भर हो जाता है। पाँच वर्ष की अवस्था में एक बालक गति नियंत्रण में परिपक्व हो जाता है। वह मिलजुल कर खेलना चाहता है एवं ऐसा कर लेने पर वह समाजीकृत महसूस करता है।

विकास के एक विशेष प्रतिमान के साथ विकास होता है। विकास सामान्य से विशिष्ट की तरफ बढ़ता है। विकास की दर में व्यक्तिगत भिन्नता स्थिर रहती है। शरीर के विभिन्न हिस्सों के विकास की दर भिन्न होती है। विकास में अधिकांश लक्षण सहसम्बन्धी होते हैं। प्रत्येक विकासात्मक अवस्थाओं के लक्षण एवं विशेषताएँ होती हैं। विकास की पूर्वजानकारी प्राप्त की जा सकती है। जिस अवस्था में जो व्यवहार सामान्य

माना जाता है, दूसरी अवस्था में वह असामान्य माना जाता है। प्रत्येक व्यक्ति विकास की मुख्य अवस्थाओं से गुजरता है।

ऊपर हमने अपने को शैशवावस्था एवं बाल्यावस्था (जन्म से छ वर्ष) के विभिन्न लक्षणों एवं विशेषताओं से परिचित किया। अब हम मध्य बाल्यावस्था जो कि छ वर्ष से बारह वर्ष तक रहती है के लक्षणों को जानेंगे। वे निम्न प्रकार हैं—

- i) साधारण क्रीड़ा के लिए शारीरिक निपुणता का शिक्षण।
- ii) एक चलते-फिरते प्राणी के रूप में अपने विषय में एक अभिवृत्ति का निर्माण।
- iii) हम उम्र साथियों के साथ साथी की भावना का शिक्षण।
- iv) उपर्युक्त लैंगिक भूमिका का शिक्षण।
- v) पठन, लिखाई एवं गणना की मूलभूत निपुणता का विकास।
- vi) दैनिक जीवन के लिए आवश्यक अवधारणाओं का विकास।
- vii) संवेदना, नैतिकता एवं मूल्यों का विकास।
- viii) व्यक्तिगत आत्मनिर्भरता की प्राप्ति।
- ix) सामाजिक समूहों एवं संस्थाओं के प्रति अभिवृत्तियों का विकास।

किशोरावस्था (11-18) के दौरान बालक अस्थिर व्यवहार करता है। कभी वह एक बालक जैसे तो कभी वह एक बड़े व्यक्ति की तरह बातें करता है। सामाजिक मूल्यों एवं काम स्वतंत्रता के आंतरिक द्वन्द्व से पीड़ित होता है। अध्ययन बताते हैं कि जीवन की इस अवधि में अन्य विभिन्न अवस्थाओं की विशेषताएँ परिलक्षित होती हैं। किशोर अपना कार्य स्वतंत्र रूप से करना चाहते हैं और किसी का हस्तक्षेप सहन नहीं करते। किशोर विपरीत लिंग के प्रति आकर्षित होते हैं लेकिन वे इस भावना को छिपाते हैं कि वे विपरीत लिंग के प्रति रुचि रखते हैं। शरीर में महत्वपूर्ण परिवर्तन हैं माँसपेशियों का तीव्र विकास, वजन एवं लम्बाई में वृद्धि, ग्रन्थियों का तीव्र विकास, जननांगों के बालों एवं छाती का आना, लड़कियों में माहवारी एवं बालकों में वीर्य इत्यादि। इस अवस्था के अन्त तक बुद्धिकौशल, औसत स्तर पह पहुँच जाता है अहम की स्वीकार एवं प्रक्षेपण योजना विकसित हो जाती है लेकिन निर्णय लेने की क्षमता में कमी रहती है। कुछ किशोरों में विरोध पनपने लगता है वे थके हुए लगते हैं। सांवेगिक तनाव भी इस अवस्था की महत्वपूर्ण समस्या होती है। इस अवस्था की मूलभूत आवश्यकता होती है पूर्ण आहार, 10 घंटे की निद्रा, पहचान एवं प्रोत्साहन।

विकासात्मक मनोविज्ञान

विकासात्मक मनोविज्ञान में उम्र में परिवर्तन के साथ जो शारीरिक मानसिक, सांवेगिक एवं व्यवहार में परिवर्तन होते हैं उनका अध्ययन एवं व्याख्या की जाती है। जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में शारीरिक एवं व्यवहारगत परिवर्तन बहुत तीव्र होते हैं एवं मानसिक एवं सामाजिक लक्षणों एवं योग्यताओं में विकास बाद की अवस्था की अपेक्षा जल्द होता है। बहुत से मनोवैज्ञानिक बाल मनोविज्ञान को विकासात्मक मनोविज्ञान के पर्यायवाची के रूप में प्रयोग करते हैं। बाल मनोविज्ञान के अन्तर्गत मानव व्यक्तित्व विकास के लिए उत्तरदायी तत्वों का अध्ययन किया जाता है जबकि यदि इसी शिक्षण का प्रयोग जब बाल्यावस्था के उपरान्त किया जाता है तो उसे विकासात्मक मनोविज्ञान के अन्तर्गत रखा जाता है। इस दृष्टिकोण के विपरीत अन्य मनोविज्ञानकों का विचार है कि बाल्यावस्था के उपरान्त मानव विकास रुकता नहीं है बल्कि जीवन की प्रत्येक अवस्थाओं में विभिन्न लक्षणों एवं योग्यताओं में हास एवं वृद्धि होती रहती है।

आपने पूर्व के बाल मनोविज्ञान की उपइकाई में बाल मनोविज्ञान के मुख्य तत्वों को जाना। यहाँ हम बाल्यावस्था एवं वृद्धावस्था के बीच के विकास के प्रमुख तत्वों को रखेंगे। आपने बाल्यावस्था के अवस्थाओं के विषय में जानकारी प्राप्त की जैसे (1) गर्भपूर्वावस्था (2) मुखकामावस्था (3) गुदाकामावस्था (4) इडिपस (5) कामप्रसुप्तावस्था और (6) किशोरावस्था एवं किशोरावस्था के उपरान्त की अवस्थाएँ। किशोरावस्था एवं वृद्धावस्था के बीच के विस्तार को तीन प्रमुख वर्गों में विभाजित किया गया है— (1) परिपक्वतापूर्व (18 से 25 वर्ष के बीच), (2) परिपक्वता (25 से 40 वर्ष के बीच) एवं (3) वृद्धावस्था (45 वर्ष से ऊपर)।

परिपक्वता — पूर्वअवस्था में व्यक्ति पूर्ण शारीरिक शक्ति एवं सांवेगिक नियंत्रण—विकसित करता है। इस अवस्था की मूल आवश्यकताएँ हैं पूर्ण आहार, नियमित शारीरिक कसरत, पहचान एवं वयस्कों से प्रोत्साहन इत्यादि। परिपक्वता की अवस्था में वह शारीरिक एवं मानसिक योग्यता के सम्बन्ध में स्थिर रहता है लेकिन अपने कार्य, व्यवसाय अथवा सामाजिक प्रतिमानों के लिए आवश्यक कुशलताओं एवं योग्यताओं में निकास एवं अनुकूल का अधिगम करता है एवं इच्छित प्रस्थिति, वस्तु एवं अवसरों की प्राप्ति करता है। इस अवस्था की मूल आवश्यकताएँ हैं शारीरिक शक्ति की सततता के लिए नियमित कसरत, पति अथवा पत्नी एवं पारिवारिक सदस्यों का प्यार स्नेह एवं देखभाल। वृद्धावस्था में शारीरिक एवं मानसिक निर्माण में हास होता है। शारीरिक शक्ति एवं अंगों में शिथिलता एवं धीरे-धीरे विभिन्न निर्योग्यताएँ विकसित होती हैं।

वाक्शक्ति, दृष्टि एवं पाचनतंत्र धीरे-धीरे कमजोर होने लगते हैं। विस्मृति एवं शारीरिक एवं मानसिक गतिविधियों में असम्बद्धता परिलक्षित होने लगती है। भावी जीवन के सम्बन्ध में चिंता एवं दृष्टिचिंता में वृद्धि होती है। वृद्धावस्था में आय एवं स्वास्थ्य के प्रति असुरक्षा की भावना आम है। इस अवधि के प्रारम्भ में महिलाओं में रजोनिवृत्ति हो जाती है। वृद्धावस्था में व्यक्ति को उपयुक्त अध्ययन सामग्री, दृष्टि के उपकरण, क्लबों एवं विचार-विमर्श के अवसर आर्थिक एवं सामाजिक सुरक्षा, ऊर्जादायक एवं पोषण वाले भोजन, चिकित्सकीय सुविधाएँ आदि आवश्यक हैं। इस अन्तिम अवस्था की प्रमुख कठिनाइयों में से हैं, अपने बच्चे की मृत्यु, पति अथवा पत्नी की मृत्यु, निकट पारिवारिक सम्बन्धी में किसी को लम्बी एवं कठिन बीमारी एवं अत्यन्त निर्धनता।

नैदानिक मनोविज्ञान

आधुनिक समाज की जटिलताओं ने समाज के सदस्यों को प्रभावित कर रखा है। हममें से अधिकांशतः के लिए सामाजिक व्यवस्था से सामंजस्य की समस्याएँ हो गयी हैं। हमें हमारे सामाजिक तत्त्वों से सामंजस्य बैठाने के लिए मदद की आवश्यकता पड़ती है। नैदानिक मनोविज्ञान की शाखा हमारे बेहतर सामंजस्य में सहायक होती है। नैदानिक मनोविज्ञान उन पहलुओं का भी अध्ययन करता है जिसका सम्बन्ध बिचलन से होता है। यह स्वस्थ सामुदायिक जीवन में बढ़ोत्तरी एवं बेहतर एवं मानसिक समस्याओं से सम्बन्धित है। नैदानिक मनोविज्ञान उन समस्याओं जैसे नियोक्ता एवं सेवक के बीच असामंजस्य, पीढ़ियों के बीच दूरी एवं समूह के साथ खराब व्यक्तिगत सम्बन्ध जैसी समस्याओं के साथ भी जुड़ा है। कई बार नैदानिक मनोविज्ञान का क्षेत्र परामर्श मनोविज्ञान, मनोचिकित्सा एवं समाज कार्य के क्षेत्र में अतिक्रमण कर लेता है।

नैदानिक मनोविज्ञान की प्रकृति को स्पष्ट करने के लिए हमें नैदानिक मनोवैज्ञानिक की क्रियाओं को समझना पड़ेगा। परामर्शक, मनोचिकित्सक एवं समाज कार्यकर्ता लोगों के सामंजस्य के लिए मनोविज्ञानिक अवधारणाओं का प्रयोग करते हैं। यह उनको समस्या के केन्द्र के विशिष्टता के आधार पर नैदानिक मनोविज्ञान से विभेदित करता है। व्यावसायिक परामर्श का सम्बन्ध व्यक्ति का उसके कार्य के साथ सामंजस्य, इसी प्रकार शैक्षिक परामर्श का सम्बन्ध व्यक्ति का उसके शैक्षणिक व्यवस्था के साथ सामंजस्य का है। मनोचिकित्सा एवं नैदानिक मनोविज्ञान में ज्यादा सम्बन्ध है। दोनों ही मानसिक बीमारियों एवं व्यक्तित्व की समस्याओं के बृहद विशेषताओं पर कार्य करते हैं। वे व्यवहारकर्ता के प्रशिक्षण एवं समस्या का समाधान करने के उपागम के संदर्भ में भिन्न होते हैं। एक नैदानिक मनोवैज्ञानिक पूर्व अनुभवों एवं अधिगम के परीक्षण द्वारा मानसिक

समस्या को दूर करने के उपागम में प्रशिक्षित होता है जबकि मनोचिकित्सक ऐसी समस्याओं को बीमारी के रूप में समझने एवं उसका उपचार करने के उपागम में प्रशिक्षित होता है। फिर भी कई मामलों में मनोचिकित्सक एवं नैदानिक मनोवैज्ञानिक समस्या के समाधान हेतु समान उपागमों का प्रयोग करते हैं। नैदानिक मनोवैज्ञानिक सामान्यतः व्यक्तिगत केशों के साथ कार्य करता है। वे परिवार, द्वैतीयक समूहों एवं समुदायों तक कार्य का विस्तार करते हैं जिसको व्यक्ति का उनके पर्यावरण के साथ सामंजस्य पर प्रभाव होता है। वह व्यक्ति के जीवन की दिशाओं एवं व्यवहारों का अवलोकन करता है उसके द्वारा व्यक्ति की सहायता करता है। नैदानिक मनोविज्ञान एवं चिकित्सा के व्यवहार में आपस में महत्वपूर्ण सम्बन्ध है कि नैदानिक चिकित्सक चिकित्सकीय तंत्र में उन्हें मरीज कहते हैं जबकि अचिकित्सकीय तंत्र में सेवार्थी कहते हैं। काफी संख्या में नैदानिक मनोवैज्ञानिक अन्य चिकित्सकों, मनोचिकित्सकों के सहयोग से चिकित्सकीय व्यवस्था में कार्य करते हैं। नैदानिक मनोवैज्ञानिक की भूमिका केवल मानसिक बीमार मरीजों से सम्बन्धित ही नहीं है। वे उन लोगों के साथ भी कार्य करते हैं जो गंभीर असामंजस्य के शिकार नहीं हैं। वे मानसिक स्वास्थ्य के साथ व्यवहार के विचलन में भी रुचि लेते हैं। जब नैदानिक मनोचिकित्सक मानसिक रोगियों के साथ कार्य करता है तो वह अपसामान्य मनोविज्ञान का प्रयोग करता है। लेकिन वे स्कूलों, उद्योगों एवं समुदायों के साथ कार्य करते हैं एवं विशेष रूप से सामान्य प्रकृति के मानवीय समस्याओं के साथ भी कार्य करते हैं।

सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यक्रम मानसिक तत्त्वों का निरोध एवं साथ ही साथ उपचार के लिए हैं। नैदानिक मनोवैज्ञानिक मानसिक रोगों की ओर ले जाने वाले कारकों की पहचान करते हैं उनके निरोध के लिए उपाय करते हैं। नैदानिक मनोचिकित्सक के लिए मनोविकृतियों का ज्ञान आवश्यक है हाँलाकि नैदानिक मनोविज्ञान एवं परामर्श मनोविज्ञान में अधिआरोपण हैं लेकिन उनके दृष्टिकोण में अन्तर है। परामर्श मूलतः व्यक्ति के घयन एवं निर्णय से सम्बन्धित है जबकि नैदानिक मनोविज्ञान—व्यक्ति के विशेष और कठिन समस्याओं से सम्बन्धित है।

नैदानिक मनोविज्ञान एवं समाज कार्य में घनिष्ठ सम्बन्ध है क्योंकि दोनों ही व्यक्ति को उसकी सामंजस्य, विचलन एवं मनोशारीरिक समस्याओं के समाधान में सहायता करते हैं। समाज कार्य में हम व्यक्ति के अहम के सशक्तिकरण, अन्तर्दृष्टि विकास, अवगम एवं निर्णय इत्यादि में मदद करते हैं। नैदानिक मनोविज्ञान में भी हम इसी पहलुओं पर कार्य करते हैं परन्तु उपागम थोड़ा गहरा, वृहत एवं मनोविश्लेषणात्मक होता है। व्यक्ति से व्यक्ति में, व्यक्ति से समूह एवं व्यक्ति से समुदाय की सामंजस्य की समस्याओं पर

कार्य करते हैं परन्तु उपागम थोड़ा गहरा, वृहत एवं मनोविश्लेषणात्मक होता है। व्यक्ति से व्यक्ति में, व्यक्ति से समूह एवं व्यक्ति से समुदाय की सामंजस्य की समस्याओं पर दोनों व्यवस्थाओं में कार्य किया जाता है। नैदानिक मनोविज्ञान में व्यक्ति के व्यक्तित्व के गुणों एवं सामाजिक कारकों के प्रति उसके अनुक्रियाओं पर ध्यान दिया जाता है जबकि समाज कार्य में सामाजिक कारकों एवं तत्त्वों पर अधिक ध्यान दिया जाता है। मानसिक विकारों के गम्भीर मामलों में मनोचिकित्सक की सहायता ली जाती है जिसे नैदानिक मनोवैज्ञानिक सहायता करता है। समाज कार्य ऐसे मामलों में केस इतिहास प्रतिवेदन के द्वारा मनोचिकित्सक एवं नैदानिक मनोवैज्ञानिक को केस संदर्भित कर देता है।

सारांश

इस अध्याय में हमने आपको समाज कार्य व्यवहार के लिए मनोविज्ञान की उपयोगिता पर परिचयात्मक ज्ञान उपलब्ध कराया है। इसमें आपको सामान्य मनोविज्ञान एवं मानव व्यवहार के साथ-साथ विकासात्मक मनोविज्ञान, बाल मनोविज्ञान एवं नैदानिक मनोविज्ञान का मूलभूत ज्ञान का परिचय दिया है।

सामान्य मनोविज्ञान एक सामान्य मानव के मनोवैज्ञानिक पक्षों का अध्ययन करता है। यह वंशानुक्रम एवं पर्यावरण से सम्बन्धित, शारीरिक एवं मानसिक अभिवृद्धि एवं विकास एवं सामान्य मानव के व्यक्तित्व के लक्षणों से सम्बन्धित अवधारणाओं एवं विधियों का अध्ययन करता है।

बाल मनोविज्ञान एक मानव के निषेचन से 18 वर्ष की उम्र के मनोशारीरिक विकास का अध्ययन करता है। बाल्यावस्था को छः अवस्थाओं अथवा जीवन की अवधियों में विभाजित किया गया है (1) गर्भ पूर्वावस्था (निषेचन एवं जन्म तक) (2) मौखिक (शून्य से एक वर्ष) (3) गुदीय (एक से तीन वर्ष) (4) इडिपस (तीन से छ वर्ष) (5) कामप्रसुप्तावस्था (छ से बारह वर्ष) एवं (6) किशोरावस्था।

विकासात्मक मनोविज्ञान किशोरावस्था के पश्चात् जीवन के अन्त तक की अवधियों के मानव विशेषताओं का अध्ययन करता है। जिसे तीन मुख्य अवधियों में विभाजित किया गया है (1) परिपक्वता पूर्व अवस्था (18 से 25 वर्ष) (2) परिपक्वता (25 से 45 वर्ष) एवं (3) वृद्धावस्था (45 से जीवन के अन्त तक)।

नैदानिक मनोविज्ञान मानव के सामंजस्य की समस्याओं एवं उन पक्षों जो कि विचलन स्वस्थ, सामुदायिक जीवन एवं मानसिक रोगों के निरोध. से सम्बन्धित है का अध्ययन करता है।

आप अवलोकन कर सकते हैं कि समाज कार्य की मूल कल्पनाएँ, अवधारणाएँ, सिद्धान्त, विधियाँ, तकनीक एवं उपकरण मनोविज्ञान है। मनोविज्ञान को मानव व्यवहार का ध्यानात्मक विज्ञान माना गया है। मानव व्यवहार के प्रतिमान सेवार्थी एवं कार्यकर्ता की अन्तःक्रिया को प्रभावित करते हैं और मनोविज्ञान के प्रक्रियाबद्ध चरण विधियाँ अन्तःक्रिया प्रक्रिया में सहायक होते हैं। मनोविज्ञान के मौलिक ज्ञान जो कि इस इकाई में दिए गए हैं आपको समाज कार्य व्यवहारकर्ता के रूप में आपकी सहायता करेंगे। यह ज्ञान समाज कार्य व्यवसाय के लिए अनिवार्य है क्योंकि यह आपको व्यक्ति के व्यवहारों को समझने की योग्यता में वृद्धि करेंगे और एक व्यक्ति को उसकी जीवन की समस्याओं के समाधान करने के लिए आवश्यक अवधारणाओं एवं उपकरणों को प्रदान करेंगे।

कुछ उपयोगी पुस्तकें

शर्मा आर.एन. एवं शर्मा आर., *बाल मनोविज्ञान*, 2000, अटलांटिक प्रकाशक एवं वितरक, नई दिल्ली।

पालिवाल एस. *समाज मनोविज्ञान*, 2002, आर. बी. एस. ए. प्रकाशक, जयपुर

गैरेट एच ई., *सामान्य मनोविज्ञान*, 1998, युरेशिया, हाउस, नई दिल्ली

कोलमैन, जे.सी., *अपसामान्य मनोविज्ञान एवं आधुनिक जीवन*, 1992, स्काटफोरमैन एण्ड कम्पनी, यू.एस.ए.।

हरलाक ई.बी., *बाल विकास*, 1956, बुक कम्पनी इंक।